दीर्घतमा औचथ्यः।द्यावापृथिवी। जगती।

ते हि द्यावापृथिवी विश्वशम्भुव ऋतावरी रजसो धारयत्कवी।

सुजन्मनी धिषणे अन्तरीयते देवो देवी धर्मणा सूर्यः शुचिः॥ १.१६०.०१

विश्वशंभुवा- विश्वमङ्गळे। ऋतावरी- ऋतयुक्ते। कवी- क्रान्तदर्शिन्यौ। ते। द्यावापृथिवी। रजसः- जगत्। धारयत्- धरतः। देवः सूर्यः- देवसविता। शुचिः- परिशुद्धः। धर्मणा- धर्मेण।धिषणे- धारणामय्योः। सुजन्मनी- शोभनजन्मयुक्तयोः। देवी- देव्योः। अन्तः- मध्ये। ईयते- गच्छति॥१॥

उरुव्यचसा महिनी असश्चता पिता माता च भुवनानि रक्षतः।

सुधृष्टमे वपुष्ये३ न रोदसी पिता यत्सीमभि रूपैरवासयत्॥ १.१६०.०२

उरुव्यचसा- विस्तीर्णे। महिनी- महत्यौ। असश्चता- असज्जमाने। पिता माता च- द्यावापृथिव्यौ। भुवनानि- लोकान्। रक्षतः- पालयतः। सुधृष्टमे- प्रगल्भयुक्ते। वपुष्ये- वपुषां हिते। न- च। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। सीम्- सर्वतः। पिता- जनको द्यौः। रूपैः। अभि अवासयत्- अधितिष्ठति॥२॥

स वह्निः पुत्रः पित्रोः पवित्रवान्पुनाति धीरो भुवनानि मायया।

धेनुं च पृश्निं वृषभं सुरेतसं विश्वाहा शुक्रं पयो अस्य दुक्षत॥ १.१६०.०३

सः। वह्निः- वोढा। पवित्रवान्- पवित्रः। धीरः- धारणायुक्तः। पित्रोः- द्यावापृथिव्योः। पुत्रः- सुतवत्स्थितोग्निः सूर्यो वा। मायया- प्रज्ञया। भुवनानि- लोकान्। पुनाति। धेनुम्- प्रीणयित्र्याः। पृश्निं च- गोरूपिण्याः पृथिव्याः। सुरेतसं वृषभम्- वीर्यसंपन्नवृषभस्थानीयस्य दिवः। विश्वाहा- सर्वेषु दिनेषु। अस्य- अस्मै उपासकाय। शुक्रं पयः- शुभ्रं सारम्। दुक्षत- दोग्धि ॥३॥

अयं देवानामपसामपस्तमो यो जजान रोदसी विश्वशम्भुवा।

वि यो ममे रजसी सुक्रतूययाजरेभिः स्कम्भनेभिः समानृचे॥ १.१६०.०४

अयम्- सूर्योग्निर्वा। अपसाम्- जीवजलमयानाम्। देवानां मध्ये। अपस्तमः- उज्जीवकः। यः। विश्वशंभुवा- विश्वमङ्गळे। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। जजान- ससर्ज। सुक्रतूयया- शोभनसङ्कल्पेच्छया। यः। रजसी- द्यावापृथिव्यौ। वि ममे- निर्ममे। अजरेभिः- अजीर्णैः। स्कम्भनेभिः- चित्तवृत्तिस्तम्भकरीभिर्भावनाभिः। समानृचे- समपूजयत्। आध्यात्मिके तु सूर्य आत्मा। अग्निः सर्वभूतहितक्रतुः। द्यौश्चिदाकाशश्चित्ताकाशो वा। पृथिवी शरीरं प्रकृतिर्वा। सर्वभूतहितक्रतुरात्मा वा शरीरमनसी नवीकृत्य तयोः शोभां दृष्ट्वा पूजयतीत्याध्यात्मिके ॥४॥

ते नो गृणाने महिनी महि श्रवः क्षत्रं द्यावापृथिवी धासथो बृहत्।

येनाभि कृष्टीस्ततनाम विश्वहा पनाय्यमोजो अस्मे समिन्वतम्॥ १.१६०.०५

गृणाने- स्तुते। महिनी- महत्यौ। ते। द्यावापृथिवी। नः- अस्मदर्थम्। महि- महान्तम्। श्रवः- कीर्तिमन्तम्। बृहत्- प्रभूतम्। क्षत्रम्- क्षत्रियधर्मम्। धासथः- धत्तम्। येन। विश्वहा- सर्वेष्वहःसु। कृष्टीः- कर्माणि। ततनाम- विस्तारयाम। अस्मे- अस्माकम्। पनाय्यम्- मन्त्रजम्। ओजः- बलम्। सम्- सम्यक्। इन्वतम्- प्रवर्धयतम्। अस्मिन्सूक्ते द्यौश्चित्ताकाशश्चिदाकाशो वा। पृथिवी

शरीरं प्रकृतिर्वा। अयमेवाध्यात्मिकोऽर्थः। चित्तशरीरयोः प्रकृतिपुरुषयोर्वा ऐक्यस्तुतिरियमाध्यात्मिके ॥५॥